(०१ मई : मजदूर दिवस विशेष)

निर्माणाधीन आशियाने की धूल में खो रहा बचपन

भवन संनिर्माण श्रमिकों के बच्चे और वायु प्रदूषण से स्वास्थ्य सम्बन्धी चुनौतियाँ

"बच्चा यहीं मेरे साथ पूरे दिन कंस्ट्रक्शन साईट पर ही रहता है" ज्योति ने सहज ही जवाब दिया। "दिनभर यहीं रेत-मिट्टी में दूसरे बच्चों के साथ खेलता है और फिर थककर थोड़ी देर सो लेता है। हम इसी साईट पर ही इंटों से बने कच्चे झोपड़े में रहते हैं" ज्योति अपने पति के साथ पिछले ६ महीने से उदयपुर के नवरत्न काम्प्लेक्स क्षेत्र में एक कंस्ट्रक्शन साईट पर रह रही है और यहीं काम कर रही है। दोनों मूलतः झारखण्ड के रहने वाले हैं। जब मैं ज्योति से बात कर रहा था, तब उड़ती सीमेंट और धूल के कारण मेरा सांस लेना दूभर हो रहा था, किन्तु ज्योति और उसका २-२.५ साल का बच्चा इन सब से बेफिक्र से थे!

भारत, अपने तेज़ी से बढ़ते शहरीकरण और बुनियादी ढांचे के विकास के साथ आगे बढ़ रहा है। निर्माण क्षेत्र भारत के आर्थिक विकास में एक महत्वपूर्ण घटक भी है। यह लाखों श्रमिकों को रोज़गार देता है, जिन में कई आजीविका की तलाश में गांवों से शहरों की ओर पलायन करते हैं। हालाँकि उचित निगरानी और गाइडलाइन्स के अभाव में निर्माण क्षेत्र के आस-पास वायु प्रदूषण का स्तर भी खतरनाक ढंग से बढ़ता है। निर्माण गतिविधियों से पार्टिकुलेट मैटर (पीएम) २.५ और १०, नाइट्रोजन ऑक्साइड (एनओएक्स), सल्फर डाइऑक्साइड (एसओ२), और वाष्पशील कार्बनिक यौगिक (वीओसी) जैसे ज़हरीले तत्व निकलते हैं, जो आस-पास रहने वाले निवासियों, वहां काम कर रहे श्रमिकों और उनके बच्चों पर ज्यादा घातक प्रभाव डालते हैं।

शहरी क्षेत्रों में, जहां बड़े पैमाने पर निर्माण कार्य होता है, श्रमिकों के परिवार अक्सर गरीबी के चलते निर्माण स्थलों के पास अनौपचारिक बस्तियों या अस्थायी घरों में रहते हैं। इन बस्तियों में उचित बुनियादी ढांचे और सुविधाओं का अभाव है, जिससे श्रमिकों, विशेषकर छोटे बच्चों को वायु प्रदूषण के हानिकारक प्रभावों का सामना करना पड़ता है।

श्रमिकों के छोटे बच्चों का इन चुनौतियों से होता है सामना:

- डब्ल्यू.एच.ओ. की रिपोर्ट के अनुसार, जब गर्भवती महिलाएँ प्रदूषित हवा के संपर्क में आती हैं तो उनमें समय से पहले बच्चे को जन्म देने की संभावना अधिक होती है और इस प्रकार जन्मे बच्चे छोटे तथा जन्म के समय कम वज़न वाले होते हैं।
- निर्माण स्थलों के पास रहने वाले छोटे बच्चे लंबे समय तक वायु प्रदूषकों के संपर्क में रहने के कारण अस्थमा, ब्रोंकाइटिस और निमोनिया सहित श्वसन संबंधी बीमारियों के प्रति अति-संवेदनशील होते हैं। निर्माण गतिविधियों से निकलने वाले सूक्ष्म कण उनके फेफड़ों में गहराई तक प्रवेश कर जाते हैं, जिससे श्वसन क्रिया ख़राब हो जाती है और दीर्घकालिक स्वास्थ्य जटिलताओं का खतरा बढ़ जाता है। वायु प्रदूषण बच्चों के शरीर में कई प्रणालियों को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है, जिससे नवजात शिशुओं सहित छोटे बच्चों में बीमार होने की दर और मृत्यु दर बढ़ जाती है।
- वायु प्रदूषण मस्तिष्क विकास और संज्ञानात्मक क्षमता को भी प्रभावित करता है साथ ही यह अस्थमा तथा चाइल्डहुड कैंसर का भी कारण बन सकता है।
- जो बच्चे उच्च स्तर के वायु प्रदूषण के संपर्क में आते हैं उनमें उम्र बढ़ने के साथ-साथ हृदय संबंधी बीमारी होने का जोखिम अधिक होता है।
- प्रदूषित हवा लाखों बच्चों के लिये ज़हर का काम कर रही है और उनके जीवन को बर्बाद कर रही है जोकि उचित नहीं है। अतः यह सुनिश्चित किया जाना ज़रूरी है कि सभी बच्चे स्वच्छ हवा में साँस ले सकें ताकि वे पर्याप्त विकास कर सकें और अपनी पूरी क्षमता प्राप्त कर सकें।
- वायु प्रदूषण से प्रभावित बच्चों के विशेष रूप से कमज़ोर होने का एक कारण यह है कि वे वयस्कों की तुलना में अधिक तेज़ी से साँस लेते हैं और इसलिये अधिक प्रदूषक अवशोषित करते हैं। ज़मीन के करीब भी रहते हैं, जहाँ हवा में धूल-मिट्टी का घनत्व ज्यादा होता है। निर्माण क्षेत्रों में ये बच्चे खुले में खेलते रहते हैं, जिससे उनका प्रदूषण के संपर्क में आना बढ़ जाता है। वयस्कों की तुलना में बच्चे शारीरिक रूप से वायु प्रदूषण के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं क्योंकि उनके मस्तिष्क, फेफड़े और अन्य अंग अभी भी विकसित हो रहे होते हैं।
- इस बात के पुख्ता प्रमाण हैं कि वायु प्रदूषण का निमोनिया से गहरा संबंध है, जो १ से ५ वर्ष की आयु के बच्चों की २२ प्रतिशत मौतों के लिए जिम्मेदार है। ५ वर्ष से कम उम्र के बच्चों में सांस की नली में संक्रमण के कारण होने वाली लगभग आधी मौतें वायु प्रदूषण से निकलने वाले कणों के कारण होती हैं।
- वायु प्रदूषण मस्तिष्क के विकास को प्रभावित करता है, जिससे बच्चों की संज्ञानात्मक क्षमता कम हो जाती है। इस प्रकार यह बच्चों के मानसिक और शारीरिक विकास को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।

क्या आप जानते हैं ?

- विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू.एच.ओ.) के अनुसार, २०१९ में दुनिया की ९९ फीसदी आबादी उन जगहों पर रह रही थी, जहां की हवा ख़राब थी और उस से बच्चों के स्वास्थ्य और विकास को गंभीर खतरा है। २०२० में आई "स्टेट ऑफ ग्लोबल एयर रिपोर्ट" का अनुमान है कि २०१९ में वायु प्रदूषण के कारण दुनिया भर में लगभग ५,००,००० नवजात शिशुओं की मृत्यु हो गई।
- भारत को दुनिया में सबसे ज़्यादा वायु प्रदूषण से संबंधित मौतों और बीमारी के बोझ का सामना करना पड़ता है। यहाँ हर साल होने वाली २० लाख से अधिक मौतों में २५% हवा की खराब गुणवत्ता के कारण होती है।
- वर्ष २०१६ में भारत में पाँच साल से कम उम्र के लगभग १,००,००० बच्चे मारे गए, इन मौतों का कारण बाहरी और घरेलू वायु प्रदूषण का स्तर था।
- भारत उन देशों में से एक है, जहाँ पाँच वर्ष से कम उम्र के सभी बच्चों में से ९८ प्रतिशत से अधिक बच्चे ऐसे क्षेत्रों में रहते हैं जहाँ पार्टिकुलेट मैटर २.५ (PM2.5) का स्तर डब्ल्यू.एच.ओ. द्वारा निर्धारित स्तर से अधिक है।

अस्पतालों तक सीमित पहुंच:

श्रमिकों के परिवारों को अक्सर पर्याप्त स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच की कमी होती है, जिससे छोटे बच्चों के स्वास्थ्य संबंधी जोखिम बढ़ जाते हैं। अक्सर निर्माण क्षेत्रों के आस पास प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र या अन्य अस्पताल नहीं होते। शहरों के निजी अस्पतालों में श्रमिक वित्तीय समस्याओं के कारण पहुँच नहीं पाते; ऐसे में बच्चों की स्वास्थ्य सुविधाओं तक पहुँच बहुत कम हो जाती है।

काम की अधिकता के कारण भी कई महिलाएं बच्चों को समय पर अस्पताल नहीं ले जा पाती। वहीँ पास के अस्पताल में बच्चों के लिए विशेषज्ञ चिकित्सकों और सांस सम्बन्धी बिमारियों की जांच सम्बन्धी उपकरणों की कमी एक अलग विषय है। ऐसी स्थिति में बच्चों के सांस सम्बन्धी बिमारियों का निदान और उपचार कम हो जाता है।

श्रमिकों के कई परिवार कम मानदेय पर गुजारा करने के लिए संघर्ष करते हैं, जिससे बच्चों में खाद्य असुरक्षा और कुपोषण होता है। खराब पोषण बच्चों की प्रतिरक्षा प्रणाली को कमजोर कर देता है, जिससे वे वायु प्रदूषण के प्रतिकूल प्रभावों के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाते हैं और मौजूदा स्वास्थ्य असमानताएं बढ़ जाती हैं। हम कह सकते हैं कि बीमार बच्चों के लिए गरीबी- कोढ़ में खाज की तरह है।

शिक्षा पर प्रभाव:

पहले स्तर पर तो निर्माण क्षेत्रों में छोटे बच्चों की प्रारम्भिक शाला पूर्व शिक्षा के लिए आंगनवाड़ी जैसी सुविधाएं ही मौजूद नहीं होती और अगर आस-पास कहीं बच्चों को भेजा भी जाए तो वायु प्रदूषण से होने वाली बिमारियों के कारण वे नियमित रूप से आंगनवाड़ी नहीं जा पाते। नियमित रूप से बीमार रहने वाले बच्चों, खासकर जिन्हें सांस सम्बन्धी बीमारियाँ हो, वे अन्य बच्चों में भी ये संक्रमण के कारक नहीं बने, इस भय से आंगनवाडी कार्यकर्त्ता उन्हें बुलाती नहीं या उन्हें अन्य बच्चों से दूर रखती है। ऐसे में बच्चों की मनोवैज्ञानिक स्थिति पर भी नकारात्मक असर पड़ता है। लगातार वायु प्रदूषण में रहने वाले बच्चों की संज्ञानात्मक सोचने समझने की क्षमता के प्रभावित होने की सम्भावना भी बनी रहती है।

क्या हो समाधान?

यह तो तय है कि इन बच्चों के सामने आने वाली चुनौतियों के समाधान के लिए एक व्यापक बहु-आयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है।

- निर्माण स्थलों पर प्रदूषण के स्तर को कम करने के लिए वायु गुणवत्ता सम्बन्धी मानकों और प्रदूषण रोकथाम सम्बन्धी नियमों का कड़ाई से पालन ज़रूरी है। नियमों का सही से पालन हो, इसके लिए उचित निगरानी और नियम टूटने पर उचित दंड या जुर्माना को सही से लागू करना भी शामिल किये जाने चाहिए।
- इन परिवारों के बच्चों के लिए निर्माण स्थल से दूर एक पालनाघर (क्रेच) या आंगनवाड़ी केंद्र की स्थापना की जानी चाहिए; जहाँ बच्चे कुछ घंटे रह सके। इस से बच्चों के सीखने की क्षमता भी बढ़ेगी और वे वायु प्रदूषण से भी बच सकेंगे।
- श्रमिकों खासकर गर्भवती महिलाओं और छोटे बच्चों की स्वास्थ्य सम्बन्धी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त अस्पताल और विशेषज्ञ चिकित्सकों सहित सस्ती या नि:शुल्क स्वास्थ्य सेवाओं का होना आवश्यक है।
- वायु प्रदूषण और इस से बच्चों को होने वाले जोखिम के बारे में पर्याप्त जागरूकता निर्माण के अवसर होने चाहिए।
- शहरी नियोजन में भवन निर्माण सहित क्षेत्र में पर्याप्त हरित क्षेत्र को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। पेड़ वहां काम कर रहे श्रमिकों और उनके बच्चों सहित वहां के निवासियों के लिए भी हवा साफ़ करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- रियायती आवास, बाल देखभाल सेवाएं और पोषण संबंधी सहायता जैसे सामाजिक सहायता कार्यक्रम प्रदान करने से श्रमिकों के परिवारों के सामने आने वाले सामाजिक आर्थिक बोझ को कम किया जा सकता है और उनके बच्चों की भलाई में सुधार हो सकता है।

चलते चलते,

ज्योति जैसी हजारो- लाखों महिलाएं और उनके बच्चे हमें कहीं भी धूल से सने नज़र आ जायेंगे। ये बच्चे आने वाले भारत का भविष्य है लेकिन वे इसके सबसे कमज़ोर सदस्य भी हैं। केंद्र और राज्य सरकारों को चाहिए कि वायु प्रदूषण के कारण बच्चों के स्वास्थ्य को होने वाले खतरों को देखते हुए इस ओर व्यापक ध्यान दें। निर्माण स्थलों के पास रहने वाले श्रमिकों के छोटे बच्चों के सामने आने वाली चुनौतियों के समाधान के लिए नीति निर्माताओं, शहरी योजनाकारों, स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं और नागरिक समाज के ठोस प्रयास की आवश्यकता है। सामूहिक और समन्वित प्रयासों से ही इस विकराल समस्या का समाधान खोजा जा सकता है।

ओम
(प्रारम्भिक बाल्यावस्था सम्बन्धी मामलों के विशेषज्ञ),
अर्बन95- उदयपुर, ICLEI साउथ एशिया